B. A. Part - 3
Paper - 6

Page No.:
Date: / /

Q. जापान के युद्धोत्तरकालीन विदेशी व्यापार की प्रकृति तथा दिशा की आलोचनात्मक व्याख्या।

Ans:- जापानियों के लिए विदेशी व्यापार एक जीवन रेखा है जिसके द्वारा राष्ट्रीय जीवन को सुरक्षित रखा जा सकता है। वैसे तो प्रत्येक देश की अर्थव्यवस्था में विदेशी व्यापार का महत्व है, लेकिन जापानी अर्थव्यवस्था में विदेशी व्यापार का विशेष महत्व है। वैसे कहा भी जाता है कि - "जापानी अर्थव्यवस्था विदेशी व्यापार से अनुशासित होती है।" अर्थात जापान के विदेशी व्यापार में अनेक विशेषताएँ देखने को मिलती है।

जापान के विदेशी व्यापार की प्रकृति

जापान के विदेशी व्यापार की प्रमुख प्रकृति निम्नलिखित है :→

1. विदेशी व्यापार प्रधान अर्थव्यवस्था :→ एक समय था जब जापान का विदेशी व्यापार नाममात्र का था। 1870 में जापान का विदेशी व्यापार मूल्य 70 लाख डॉलर था। परन्तु 115 वर्षों की अवधि में जापान की अर्थव्यवस्था में 1987 में विदेशी व्यापार का मूल्य 38,200 करोड़ डॉलर

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

को लगभग हो गया। इस प्रकार विदेशी व्यापार जापानी अर्थव्यवस्था की आधार-शिला है और जापानी अर्थव्यवस्था विदेशी व्यापार का अनुसरण करती है। गत १२ वर्षों में जापान के विदेशी व्यापार में तीन गुना से अधिक वृद्धि विश्व में सबसे अधिक वृद्धि है।

2. व्यापार में वृद्धि की प्रवृत्ति :→

मैजी शासन के बाद जापान के विदेशी व्यापार में निरन्तर वृद्धि देखने को मिलती है जो इस बात का प्रमाण है कि जापानी अर्थव्यवस्था में विदेशी व्यापार का महत्व बढ़ता जा रहा है। 1947 में जापान के विदेशी व्यापार का मूल्य 80 करोड़ डॉलर था, वह 1960 में बढ़कर 855 करोड़ डॉलर हो गया। 1987 में बढ़ते हुए जापानी विदेशी व्यापार का मूल्य 38,200 करोड़ डॉलर हो गया।

3. आयात और निर्यात की सापेक्षिक वृद्धि :→

युद्धोत्तर काल में जापान के विदेशी व्यापार में एक विशेषता यह पाई जाती है कि आयात और निर्यात दोनों में वृद्धि हुई

है, पर आयात निर्यात की अपेक्षा अधिक है। जहाँ 1947 में आयात और निर्यात क्रमशः 52.6 तथा 17.4 करोड़ डॉलर के थे वे 1960 में क्रमशः 949.1 करोड़ तथा 405.5 करोड़ डॉलर रहें। केवल 1965 में प्रथम बार निर्यात का मूल्य आयात की अपेक्षा अधिक रहा। द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व भी जापान का विदेशी व्यापार बड़ा था पर इतनी सीमा तक नहीं। 1987 में आयात-निर्यात क्रमशः 23,120 करोड़ डॉलर व 15,080 करोड़ डॉलर रहें।

4. व्यापार शेष की स्थिति :→ युद्धोत्तर काल के बाद जापान का व्यापार शेष प्रतिकूल रहा। 1945-46 में व्यापार शेष 23 करोड़ डॉलर से तथा 1951 में 64 करोड़ डॉलर से प्रतिकूल था। 1974 में जापान का व्यापार शेष 600 करोड़ डॉलर से प्रतिकूल था। 1977 में व्यापार शेष 975 करोड़ डॉलर से पक्ष में हो गया। वर्ष 1987 में व्यापार शेष 8,040 करोड़ डॉलर के पक्ष में था।

5. विदेशी व्यापार की संरचना :→

जापान की अर्थव्यवस्था की विशेषता है कि तमाम उतार-चढ़ाव के बावजूद निर्देशक

हमेशा इसकी तरफ आकर्षित होते हैं। जापान दुनिया के 8 सबसे बड़े ताकतवर देशों समूह जी-8 का हिस्सा है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार जापानी अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी ताकत है। जापान में लगातार बढ़ रहे विदेशी निवेश ने उद्योगों को बढ़ावा दिया और जापान को विश्व में आर्थिक ताकत के तौर पर स्थापित करने में मदद की।

जापान में अब मुख्य निर्यात की वस्तु में लोहा इस्पात, जलयान, सूती वस्त्र, रेशमी वस्त्र, मीटर, रेडियो, टेलीविजन, उर्वरक इत्यादि है। जबकि आयात के मुख्य वस्तुओं में गेहूँ, चीनी, कपास, खनिज तेल, ऊन, लोहा, अयस्क, सोयाबीन, कोयला इत्यादि मक्का आदि का समावेश होता है। जापान की यह सबसे बड़ी विशेषता है कि यह कच्चा माल मँगाकर उसे उत्पादन मूल्य प्रदान करता है व ऊँचा लाभ कमाता है। यह भारत का लोहा अयस्क लेकर भारत को लौह इस्पात का निर्मात करता है।

6. जापान के विदेशी व्यापार की दिशा में परिवर्तन

जापान के विदेशी व्यापार की दिशा में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। वर्तमान में अमेरिका का आयात निर्मित व्यापार में

Scanned with CamScanner

सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्थान है। अमेरिका का भाग क्रमशः 18.3 व 26.2 प्रतिशत है जबकि सऊदी अरब का भाग क्रमशः 15.5 तथा 4.8 प्रतिशत है इसी प्रकार विकासशील राष्ट्रों का यह प्रतिशत क्रमशः 57.7 तथा 45 प्रतिशत है।

7. सरकार की निर्यात प्रोत्साहन नीति :→

जापान सरकार ने हमेशा विदेशी व्यापार में वृद्धि की कोशिश की है। विशेषकर निर्यात व्यापार में जापान सरकार ने निर्यात बढ़ाने के उद्देश्य से उद्योगों को प्रत्येक प्रकार की तकनीकी, ... वित्तीय व अन्य सहायता प्रदान की है।

8. निजी उत्पादकों की कुशलता :→
जापान के व्यापार में वहाँ के निजी साहसियों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वहाँ के निजी साहसियों ने कुशलतापूर्वक कम लागत पर उत्पादन किया है। समय-समय पर मेलों, प्रदर्शनियों, शिष्ट मंडलों व नमूनों के माध्यम से अपने वस्तुओं का प्रचार किया है।

9. जापान का व्यावसायिक दृष्टिकोण :→ जापान ने विदेशी व्यापार के सन्दर्भ में हमेशा व्यावसायिक

Scanned with CamScanner

दृष्टिकोण अपनाया है। ऐसे देश जिसके विचार राजनीतिक रूप से मेल नहीं खाते, इसके साथ भी जापान के व्यापारिक सम्बन्ध रहे हैं।

उपर्युक्त विशेषताओं से यह स्पष्ट होता है कि जापान कच्चे माल की पूर्ति के लिए आयातों की वृद्धि करने में प्रयत्नशील है। 1985 से उसने 93 प्रतिशत आयातों की वस्तुओं पर प्रतिबन्ध हटा लिया है। यह विकासशील राष्ट्रों से व्यापार में वृद्धि कर रहा है तथा उद्योगों से सस्ता माल निर्मित कर भुगतान संतुलन को पक्ष में कर सकता है। वर्ष 2008 में तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह ने भारत और जापान के बीच सीमा शुल्क की कटौती का समझौता किया। समझौते के तहत कई चीजों के आयात एवं निर्यात पर लगने वाले सीमा शुल्क में भारी कटौती होने लगी। जापान एक मात्र देश है जिसने परमाणु बम हमले की विभीषिका झेली है इसलिए जापान में परमाणु हथियार विरोधी भावना बड़ी प्रबल है।